पाठ 9. तुम कब जाओगे अतिथि

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में भावनाओं पर नियंत्रण संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे उत्तेजित व उद्वेलित करने वाले कारकों से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता बढ़ा सकें। मेहमान का आना आज भी उल्लास का विषय हो सकता है लेकिन महानगरीय जीवन में अगर कोई मेहमान आ तो जाए लेकिन जाने की तिथि भूल जाए तो आतिथ्य करने वाले का बजट और उसकी भावना का कितना क्षय होगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं। आइए, जानें एक ऐसे ही आकर न जाने वाले मेहमान की उपस्थिति से उपजा विकट अनुभव।

पाठ का सार

व्यंग्य अपने आप में बात को कहने का अनूठा और असरदार तरीका है। यहाँ शरद जोशी जी ने मेहमान के आने के कारण और उसके कई दिनों तक टिके रह जाने के कारण जो परेशानियाँ घरवालों को झेलनी पड़ती हैं, उनको हास्य-व्यंग्य शैली में प्रकट किया है।

मेहमान आए। घर के लोगों ने बड़ी तहज़ीब से उनका स्वागत किया। उन्हें यह आशा थी कि अगले दिन वे मेहमान से यहाँ रुकने को कहेंगे भी, तो भी वे अपने घर जाने को आतुर दिखाई देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कई दिन बीते। हर दिन हालात संगीन से संगीनतर होते चले गए। पहले दिन किए गए आतिथ्य की तुलना में भोजन और संवाद न्यूनतम पर पहुँच गए। मेहमान को दिखा-दिखाकर कैलेंडर की तारीखें बदली गईं। चादर बदलने के पीछे भी यही संकेत था कि अब तो चले जाएँ मेहरबान। चौथा दिन संवादहीनता की स्थिति में बीत रहा है। अगर मेहमान जी एक दिन और ठहर गए तो हो सकता यह चुप्पी विस्फोट का रूप ले ले। मेहमान देवता होते हैं, लेकिन उनके ठहरने की एक सीमा होती है। अतिथि सेवा की हमारी परंपरा किन परिस्थितियों में क्यों नष्ट हो जाती है, इस बात को अच्छी तरह लेखक ने दर्शाया है। यह सबक हमारे लिए भी है कि हम किसी के यहाँ मेहमान बनकर जाएँ तो वहाँ कितनी देर टिकें। अब साधन और समय का अभाव सभी को सता रहा है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति के पंच जहाँ भी प्रयुक्त हों उनके पैनेपन पर विशेष चर्चा की ज़रूरत रहती है। ऐसे प्रसंगों, वाक्यों, वाक्यांशों या पदों को व्यर्थ न जाने दिया जाए। वाचन की सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते जहाँ विद्यार्थी लेखकीय विद्‌ग्धता, उसकी व्यंजना को न पकड़ पाएँ, वहाँ बीच में अध्यापकीय हस्तक्षेप ज़रूरी है। बदलते व्यक्ति व सामाजिक मनोविज्ञान के कारणों पर चर्चा अपरिहार्य है।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 3** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - शब्द संपदा से जुड़े प्रश्नों को लेकर दिए गए शब्दों से बाहर के शब्द-संसार के भाषिक प्रयोगों से विद्यार्थियों का मौखिक-लिखित परिचय ज़रूर कराएँ। भाषा-प्रयोग के विषय में विशेष चर्चा की यहाँ आवश्यकता है।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- "घर आएँ ऐसे मेहमान,
  मुश्किल में पड़ जाए जान!"
  इसी तरह की तान पर परिहासपूर्ण वातावरण में कक्षा में सामूहिक रूप से कविता रचना की जाए। साथ ही साथ 'अतिथि देवो भव:' तथा अंतरिक्षयात्री की वेश-भूषा के बारे में जानकारी दिलवाएँ। इसके लिए इंटरनेट आदि की सहायता ली जा सकती है।